मेरे गीत खींच लाएंगे

सुदीप के गीत

BlueRose ONE.com DIY
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sudeep 2025

All rights reserved by copyright holder. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright holder. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-6261-232-8

First Edition: April 2025

***

संपादक Editor - बिंदिया हलौअर Bindia Hallauer

शोधक Researcher - विजया सुदीप Vijaya Sudeep

© बिंदिया हलौअर Bindia Hallauer

परिचय

विश्व के पाठक, सुदीप जी को संवेदनशील कवि के रूप में जानते हैं।

युवा गुलशन कुमार ‘सुदीप’ ने चौदह साल की छोटी उम्र से कविताएं और गीत लिखना शुरू कर दिया था।

ऐसा कहा जाता है कि सन १९५९ में, प्रतिष्ठित भारतीय राष्ट्रीय कवियों के सम्मेलन में भाग लेते हुए - देश के सबसे प्रसिद्ध और प्रिय कवि सूर्यकांत त्रिपाठी **'निराला'** जी ने गुलशन कुमार के गीत और कवितायें सुनकर उन्हें **'सुदीप'** उपनाम से सम्मानित किया। इसी के बाद उन्होंने अपना कलम नाम ‘सुदीप’ अपना लिया।

महानन्द मिशन इंटर कॉलेज लीग के साथियों ने सत्रह साल की उम्र के ‘सुदीप’ को एक आगामी उभरते कवि के रूप में स्वीकार कर लिया था।

१९६० से २०२० के वर्षों में, सुदीप जी की १२० से अधिक कविताएं और लगभग ४० गीत; अनगिनत पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, इनमें शामिल हैं - *ट्रिब्यून, जनसत्ता सबरंग, नवभारत टाइम्स, संडे मेल, नूतन सवेरा, सारिका, धर्मयुग, दैनिक भास्कर* और *संबोधन।*

‘मेरे गीत खींच लाएंगे’ संग्रह में, सुदीप जी का परिवार सुदीप जी के पहले अज्ञात संग्रहीत गीतों को प्रस्तुत करता है। हमें उम्मीद है कि आप इन गीतों का आनंद लेंगे।

- श्रीमती विजया सुदीप, बिंदिया और कार्तिक

गीत

गीत सुनाता ही जाऊं मैं!.. १
सारे जग को २
मेरे गीत खींच लायेंगे ४
गीत मैं जो गा रहा हूँ.. ५
मधुमय हो जाता है.. ७
नज्म तेरे रुख पे.. ८
लूट गया जो ९
तू क्यों सोचे बांवरी..१०
बतियां सारी भूल गयी १२
आओ, आओ हे नव वसंत १३
ओ हँसते, मुस्काते मुखड़ो !.. १४
आओ अब निर्माण पूज लें....! १५
अभिनय.. १७
ऐसी कोई बात नहीं है..१९
इतना बता दो.. २१
मेरी अभिलाषा एकाकी २३
क्यों कलिका खिल रोती है २४

सांझ सलौनी आती है अब २५
कोई देखता रहा २६
मैंने नहीं निमंत्रण पाया २७
आज रात कितनी उदास है २८
मांगता रहा हज़ारों बार २९
जीवन-वीणा तान-विहीना ३१
अब मत बरसो काले बादल ३२
जिऊं किस तरह ३३
आज न सूरज की ३४
केवल बीती बातें ३६
मिटा था तिमिर ३८
यथार्थ और कल्पना ३९
न तो ४०
हो सकता है ४१
यह तो सच है ४३
दुख-सुख तो ४५
सब कहें विदा विदा ४६
जग वालो, कह दो ४७
मैंने अपने गीत लुटाये ४९

गीत सुनाता ही जाऊं मैं !

तुम चाहो तो सांझ ढले तक, गीत सुनाता ही जाऊं मैं।

रवि जब अपने आप रक्तिम मुख को,
तिमिर पटल के बीच छुपा ले |
और नदी की लहर - लहर कर,
मन्द पवन को पास बुला ले ॥

अपनी पलकें तभी मूंद कर, स्वप्न सजाता ही जाऊं मैं |

मन – मधुकर तो गूंज उठेगा,
देखेगा जब नयन कली को |
लेकिन अश्रु बहा देगा वह,
कहीं नहीं यदि कली खिली तो ॥

मधु सी मधुर अगर तुम चाहो, प्रीति बसाता ही जाऊँ मैं।

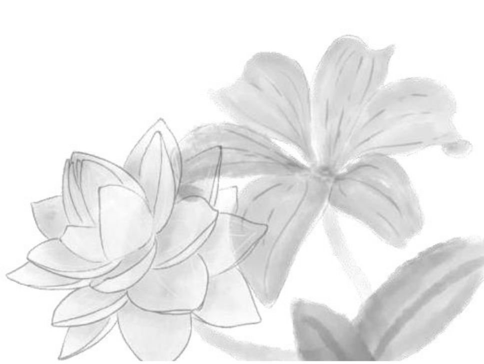

सारे जग को

सारे जग को प्यार मिले तो,
मैं तब ही मुसका पाऊंगा,
मधुरिम गीत सुना पाऊँगा।

रजनी ने आंसू बरसा कर,
फूलों को गहने पहनाए,
कवि ने कटु अनुभव से जग को,
मीठे मीठे गीत सुनाए।
सब के खुश हो जाने पर ही—
मैं अपना मन बहलाऊंगा।
मधुरिम गीत सुना पाऊँगा।

पीउ-पीउ करने वाले की,
रटन भले असफल हो जाये।
कवि का हमदर्दी वाला स्वर,
चाहे अंबर में खो जाये।
प्यासा रहा अगर प्यासा ही,
बनकर जलद बरस जाऊंगा,
मधुरिम गीत सुना पाऊँगा।

में पीड़ित हूं, तुम पीड़ित हो,
वह पीड़ित है, जग पीड़ित है।
सब पीड़ित हैं फिर भी जाने—
क्यों हर एक स्वयं में रत है।
सुख की नींद नहीं सोऊँगा,
यदि सबको न मिला पाऊंगा—
मधुरिम गीत सुना पाऊँगा।

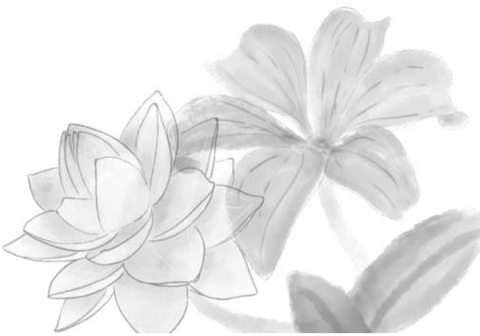

मेरे गीत खींच लायेंगे

चाहे छिपो नील अंबर में
चाहे रहो अतल सागर में
चाहे बसो शून्य में जा कर
ये तो हर सूं गुनगुनायेंगे

देखो या ना देखो तुम तो
क्या अंतर पड़ता है मुझको
प्रीत-लता यदि सूख गयी तो
है विश्वास, सींच जायेंगे

सब से ऊंचा होता दर्शन
लेकिन इनमें भी आकर्षण
जाओ जितनी दूर हो सके
ये पीछे-पीछे आयेंगे |

गीत मैं जो गा रहा हूँ

गीत मैं जो गा रहा हूँ वह तुम्हारा है,
नहीं संदेह इसमें |

भाव-सरिता के किनारे
बैठ कर मैं सोचता हूं
क्यों न वंशी श्वास की ले
उम्र की मछली फंसा लूं।
विश्व के मझधार में मैं
बाट जिसकी जोहता हूं
क्यों न उस निष्ठुर मिलन पर
चांद - तारों को हँसा लूं|

डूबते को जो संभाले वह किनारा है
नहीं संदेह इसमें।

जिंदगी मेरी तपन है
प्यार जिसमें घूंट कटु है
आंसुओं का ढुलक आना
मुस्कराहट नयन की है |
सब तरफ कलियां बिछी थीं
इस जगत के रंग-वन में

बीन लाया वेदनाएं
भूल मेरे चयन की है |

राह भूले को दिखा दे वह सितारा है
नहीं संदेह इसमें |

मधुमय हो जाता है

अलि का मधुरिम मधुरिम गुंजन
मैं सुन कर नित रहता उन्मन

पवन – हिलोरें गुंजन – मधुमय
ताल मिलाते कोमल किसलय
धरती की अलकों में कुंकुम
बरसाता बालक रवि रक्तिम

मधुमय हो जाता है तन – मन
अलि का मधुरिम मधुरिम गुंजन

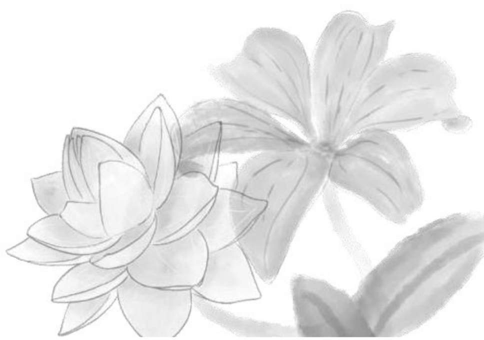

नज़्म तेरे रुख पे

रात को ख़्वाब में जो नज़्म लिखी
सहर हुई तो बड़ी साफ़ तेरे रुख़ पे दिखी

चंद अल्फ़ाज़ दिखे शर्मसार आंखों में
चंद बिखरे पड़े थे ग़ेसुओं की उलझन में

चमक रहे थे सुर्ख़ नाक पे भी कुछ नुक़्ते
बात शबनम से हुई हो जैसे रुक के

गर्म पेशानी पे कुछ गुंथ गये थे ज़ेर ज़बर
कांपते होंठ पे डेरा किये थी आधी सतर

नज़्म को लफ़्ज़ समझ बैठे कोई बज़्म तुझे
फैल कर इस तरह वो दे गये सौ मानी मुझे

लूट गया जो

आकुल मन था
पीड़ित तन था
मैं था खड़ा जहाँ पर
वह बन जैसा वन था

नभ में धन था
दूर सुमन था
झांक रहा था झुरमुट से मैं
- वह पावन था

विकच बदन था
लोचित तन था
लूट गया जो मुझको
उसका भोलापन था

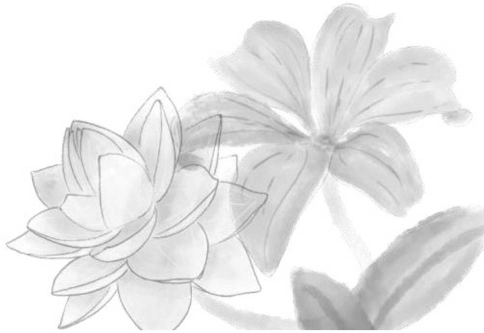

तू क्यों सोचे बांवरी

तू क्यों सोचे बांवरी
भर आंखों में नीर री,
कब परदेसी साँवरे
संग ले जाते पीर री |

मन-मंदिर की देहरी –
जलता निसि-दिन नेह री,
पत्थर के हैं देवता –
कभी न आये गेह री |

हलका बादल आ कर बस
बरसाता है तीर री,
कभी न देता शीतल जल,
संग ले जाता धीर री।

तेरा कया है मोल री,
क्या कुछ पाया बोल री,
उसकी भूली बातों को
यादों से मत तोल री |

नयन उठा अब सांवरी,
देख लगी है भीर री,
सपनों को सो जाने दे,
मेरी भोली हीर री |

बतियां सारी भूल गयी

टूटा डांड़ निगोड़ी का
ज्यों पग फूटा घोड़ी का
पड़ी भंवर में नाव री !

लहरें लहर सवारी बन
तोड़ गगन से लाती धन
नहीं सूझती ठांव री!

बतियां सारी भूल गयीं
ज्यों बुंदियों सँग धूल गयी
धूप निगल गयी छांव री!

भीगे हैं अंग सारे री
पवन शीत शर मारे री
थरथर कांपें पांव री !

अब तो आ निर्मोही रे
में हूं तेरी मोही रे
पीछे छूटा गांव री !

आओ, आओ हे नव वसंत

तुम आये कलियां मुस्कायीं
आनंदित लतरें लहरायीं
हर हरी शाख अब कहती है –
हो गया शिशिर का अंत-अंत।

पल्लव विहीन तरूओं को नव
अब मिले मृदुल रक्तिम पल्लव
रति बोल उठी अपने पति से –
अब तो धरती पर चलो कंत।

अब डाल-डाल मधुकर झूमे
हर खिले फूल का मुख चूमे
तितली भी उड़ कर आती है
टुक रस ले उड़ जाती तुरंत।

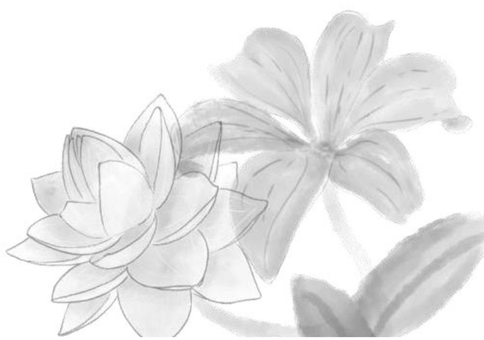

ओ हँसते, मुस्काते मुखड़ो !

ओ हँसते, मुस्काते मुखड़ो !
मेरे पास चले आओ तुम !
अपनी तुतली - सी भाषा में,
प्यार भरा गाना गाओ तुम।
तुम ऊषा की नई किरन हो,
मैं रजनी का काला आँचल।
तुम गंगा की मृदुल उर्मियाँ,
मैं हूं सागर का खारा जल।

तुम प्रतीक हो उन्नत पथ के,
मैं अवनति दिखलाने वाला।
मैं दुखमय हूँ, तुम सुखमय हो;
तुम्हीं सुधा हो, मैं विष काला।

आओ, अपने इन हाथों से,
मेरे मन की खिड़की खोलो।
मुझको हँसते मुखड़े प्रिय हैं,
हँस कर कानों में रस घोलो।

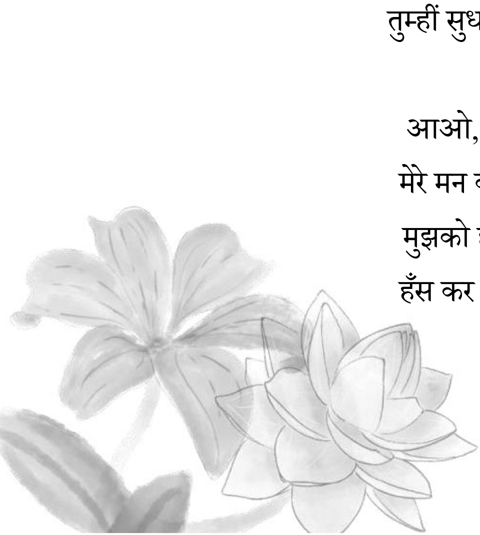

आओ अब निर्माण पूज लें...!

सदियों तक पूजा देव दनुज को साथी,
है नहीं किसी को लेकिन हमने पाया |
हम रहे पूजते पग हैं पाषाणों के,
निज निकट भला है किसने हमें बुलाया?

हम भूल गए थे, आओ अब इनसान पूज लें,
अब देव दनुज को छोड़, चलो निर्माण पूज लें।

हम रहे रगड़ते माथा दहलीजों पर,
लेकिन पत्थर को कभी न करुणा आई |
हम भटक गए थे पथ से अपने साथी,
थी इसीलिए यह धरती हुई पराई |
अब जागे हैं तो अब तो चलो किसान पूज लें,
अब देव-दनुज को छोड़, चलो निर्माण पूज लें।

हर एक कृषक धरती का ईश बनेगा,
तब धरती भी खुश हो वरदान करेगी |
सूखे, रोते, नंगे, काले बच्चों को,
अब खिला रही, तब खुश हो प्यार करेगी |

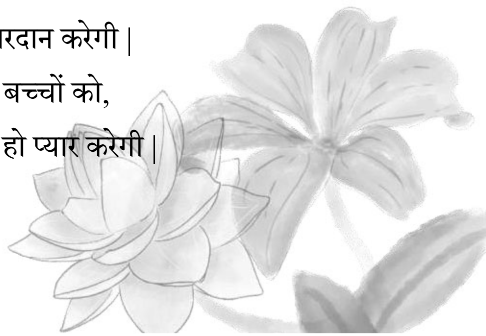

अब नए खेत की बाली औ' यह धान पूज लें,
अब देव दनुज को छोड़, चलो निर्माण पूज लें |

अभिनय

क्यों झूठा अभिनय करते हो
किसको मधु से प्यार नहीं है

सोलह कलापूर्ण चंदा जब
नभ में अपनी छटा दिखाता
सागर अपनी चंचल लहरें
ले कर है उस तक उठ जाता

उसका वह उन्माद कहो तो
किसे भला स्वीकार नहीं है

जैसे ही कलिका खोले है
अपने बचपन का अवगुंठन
उसी बेर मधुकर बौरा कर
खींचे है मुख-घूंघट-बंधन

यौवन-घट जब छलके सम्मुख
किसको अंगीकार नहीं है

क्यों फिर आज तुम्हारे मुख पर
छायी है लज्जा की लाली
लज्जा को निर्लज्ज बना कर
मधु की प्याली लो मतवाली

उड़ो हवा में पंख बने-से
जीवन है यह -- भार नहीं है

ऐसी कोई बात नहीं है

होंठों पर भी आ करके जो नहीं बिरानी होने पाती
ऐसी कोई बात नहीं है।

बन कर आया था जो पाहुन
दर्द बना स्वामी इस तन का
नहीं किसी को आने देता
बंद किया दरवाज़ा मन का
तम की झीनी-सी चादर में मिलन नहीं जो होने देती
ऐसी कोई रात नहीं है।

जब से जादू चला हृदय पर
काले बादल-सी अलकों का
तब से बंधन टूट गया है
मरुथल-सी सूखी पलकों का
बालक रवि की स्मित दिखला कर सोये कमल खिला ना पाये
ऐसी कोई प्रात नहीं है।

जीवन में गर प्यार नहीं है
तो जीवन क्या -- बुरी दुआ है
रिसते ज़ख्म मिले तो क्या है
हमें प्यार ने खूब छुआ है
तन का ताप हरे, लेकिन, जो मन का ताप नहीं हर पाये
वह कोई बरसात नहीं है।

इतना बता दो

देखकर भी मूंदते हो क्यों नयन तुम,
प्राण मेरे, बस मुझे इतना जता दो।

खींच लेती जिस तरह रजनी चुनरिया;
देखकर रवि की सुनहली-सी किरण को
भीग जाती जिस तरह काली बदरिया
देख कर नग के रूपहले आवरण को

पास ही देखो तुम्हारे मैं खड़ा हूँ
मुंह चुरा कर अब न यूं मुझको सजा दो।

क्यों तुम्हारे भी हृदय में कपट छाया
क्यों भला तुम में अजब अंतर हुआ है
क्यों पड़ा तुम पर किसी का क्रूर साया
क्यों जगत की वायु ने तुम को छुआ है

तनिक बोलो और खोलो अब नयन तुम
आग जो मन में बसी है वह बुझा दो।

सत्य वैसे भी नहीं छिपता कभी है
बात अंतस् तक तुम्हारे पहुंच पायी
चाहने पर होठ भिंचते ही नहीं हैं
देख लो मुस्कान उन पर झिलमिलायी

पलक-पट की डोर खींचो अब नयन से
सब तरफ़ अब फूल नजरों के खिला दो |

मेरी अभिलाषा एकाकी

जब तक प्राण तभी तक आशा
तब तक प्राण जहां तक आशा
घोर निराशा में अभिलाषा जैसे हो उज्ज्वल रेखा-सी |

अंतर में धुंधली-सी छाया
फैलाये है ऐसी माया
बंद नयन, फिर भी है दिखती, मेरे सपनों में मदमाती ।

अंदर-अंदर सुलग रहा है
पर ऊपर से बुझा-बुझा है
ज़रा हवा तो दे कर देखो, भक् से भड़केगा दिल, साथी |

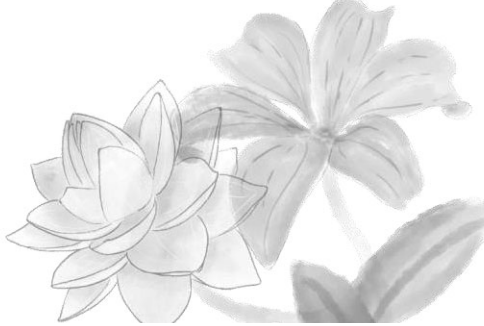

क्यों कलिका खिल रोती हैं

कुछ ऐसे भी आंसू हैं
दृग में न कभी आते हैं
पर सच्चाई है, उनमें
कुछ पीर अधिक होती है

कुछ ऐसी बातें साथी
जो कभी नहीं खुल पातीं
पर सत्य बात है उनमें
गहराई भी होती है

वे हँसते-हँसते मरते
जो मूक प्रेम हैं करते
उस मूक प्रीत-भाषा में
धड़कन होती है |

सांझ सलोनी आती है अब

विकल खड़ी है कौन अकेली,
जैसे दुलहन नयी नवेली
आकुलता से भरे नयन को
नभ की ओर उठाती है अब |

दूर कहीं दीपक जलता है
जैसे उसका दिल बलता है
देख शिखा से नेह टपकता
आंखों को समझाती है अब |

उसके स्वप्न मिटे हैं सारे
टूट गये हैं सभी सहारे
यह जीवन है एक पहेली
सोच कहीं पछताती है अब |

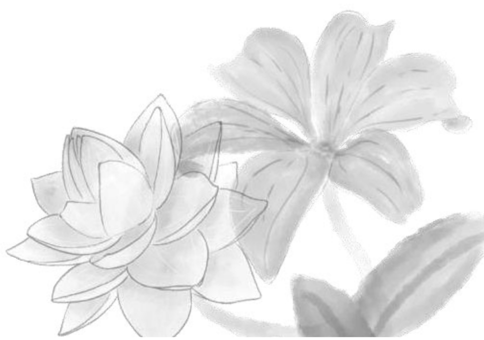

कोई देखता रहा

आधा टूक चांद हज़ार टूक तारे
ढूंढ ढूंढ हारे
खोई हुई परछाइयां
कोई देखता रहा

आया पतझार गया बिरवे छेड़
रहे फुनगी लटकते
पत्ते डेढ़
कोई देखता रहा

मैंने नहीं निमंत्रण पाया

मैंने तो सौ बार पुकारा
नहीं तुम्हारा मिला इशारा
आंखों ने आंसू छलकाये
रोते-रोते अंतर गाया –
मैंने नहीं निमंत्रण पाया।

गीत बहुत हैं मैंने गाये
लेकिन मन के मीत न आये
मधु के प्याले में सपनों को
खो कर मैंने दिल बहलाया
मैंने नहीं निमंत्रण पाया।

यह कैसा मुख पर है अंचल
नहीं तनिक-सा भी जो चंचल
कैसा रूप बना कर आयी
आज याद की सोनल छाया
मैंने नहीं निमंत्रण पाया।

आज रात कितनी उदास है

हर तारे के नयन रो रहे,
रो, शबनम के बीज बो रहे,
रूठा है रजनी से चंदा, धरती से रूठी सुवास है,
आज रात कितनी उदास है।

महक कहां कलियों की सोयी ?
क्यों मधुकर ने गुनगुन खोयी ?
डाल - डाल से फूल झर गये, सूखा - सा देखो पलास है,
आज रात कितनी उदास है।

यह अनुभूति-व्यथा गहरी है,
मन पर स्थिर ग़म का प्रहरी है,
कौन चला आया करने को दुख के घर का शिलान्यास है,
आज रात कितनी उदास है।

मांगता रहा हज़ारों बार

मांगता रहा हज़ारों बार, मिला पर कहां तुम्हारा प्यार।

गगन के तारों ने मिल आज
पुकारा था मुझको पर मौन
सजे थे चमक चांदनी साज
मगर सोचा पहुंचा है कौन

गिरे तब अश्रु वहीं दो-चार, सितारों ने भी लिया निहार।
मांगता रहा हज़ारों बार, मिला पर कहां तुम्हारा प्यार |

सुनाया खग-कुल ने मृदु गान
बुलाया नहीं मगर निज पास
गगन में ऊंची भरी उड़ान
रहा मैं बैठा यहीं उदास

उठा है धुआं जिगर से आज, झुलस जाये न अब संसार |
मांगता रहा हज़ारों वार, मिला पर कहां तुम्हारा प्यार |

बुला ले तू ही अब ओ चांद
भुला दूं मीठे स्वप्न अनेक
नहीं तो टूट रहा दृग-बांध
करेगा क्या तू इसको देख

उठाने को प्रतिपल तैयार, मिला पर कहां मीत सुख-भार |
मांगता रहा हजारों वार, मिला पर कहां तुम्हारा प्यार |

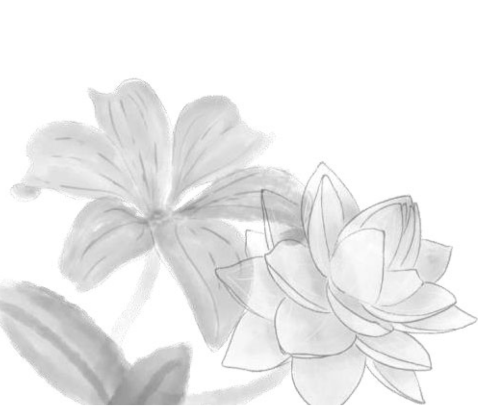

जीवन-वीणा तान-विहीना

गीत मीत के साथ गये सब
शेष बचे केवल आंसू अब
छलक रही थी जो मधु से वह
गगरी आज हुई रसहीना |

कली खिली, मुरझायी, टूटी
जैसे मेरी किस्मत फूटी
प्रेम दरस पाने से पहले
मुझको पड़ा गरल-घट पीना |

पारस हो मंदिर के तुम तो
भूले से ही छू लो मुझको
पाहन मुझे बना कर रख लो
तनिक सफल हो मेरा जीना |

अब मत बरसो काले बादल

नयन-बंध अब टूट चुका है
साथी मुझसे रूठ चुका है
प्रलय अश्रु ही ले आयेंगे
तुम मत टूटो काले बादल

सागर का अस्तित्व मिटेगा
नभ में हाहाकार मचेगा
क्यों छीना यों मीत किसी का
सोच-सोच कर फूटो बादल

डाली से क्यों कलिका छीनी
जिसमें थी सुगंध अति भीनी
सोच-सोच कर लज्जित हैं सुर
तुम भी माथा कूटो बादल

जिऊं किस तरह

शीत पवन है
तरल गगन है
फटा हुआ हर एक वसन है
तुम्हीं बताओ -- सिऊं किस तरह |

पुष्पित वन है
रसमय घन है
विष मेरा एकाकी धन है
तुम्हीं बताओ -- पिऊं किस तरह ।

आकुल तन है
घायल मन है
जीवन की मुझसे अनबन है
तुम्हीं बताओ -- जिऊं किस तरह |

आज न सूरज की

आज न सूरज की किरणों को अर्घ्य चढ़ाऊंगा
जाने क्यों ये आज कलंकित हो कर आयी हैं।

आज नहीं कलियों का मुखड़ा उजला-उजला-सा
आज नहीं है पुरवैया भी महकी-महकी-सी
आज न जाने क्यों सब का मुख है मुरझाया-सा
आज सभी की नजरें भी हैं बहकी-बहकी-सी

आज न टूटे सपनों की मैं बात चलाऊंगा
जाने कहां अभागिन यादें हो कर आयी हैं।

आज नहीं सरिता की लहरें चंचल पहले-सी
आज नहीं है तट भी सुंदर भूरी रेत भरा
आज नहीं खग-कुल का कलरव मीठा-मीठा-सा
सूख गया है कल तक था जो मेरा खेत हरा

अपने पाहुन दुख को कैसे सुखी बनाऊँगा
घोर उदासी की घड़ियाँ मुंह धोकर आई हैं।

नील गगन में कैसा है यह काला धूम उठा
खा जायेगा सब कुछ देखो, ऐसे घूर रहा
यह नाराज़ी या गुस्सा है ऊपर वाले का :
नर से नर का सुख ही देखो जाता नहीं सहा

आज नहीं स्वागत करने को नयन बिछाऊँगा
मेरी यादें ही अपनापन खो कर आयी हैं।

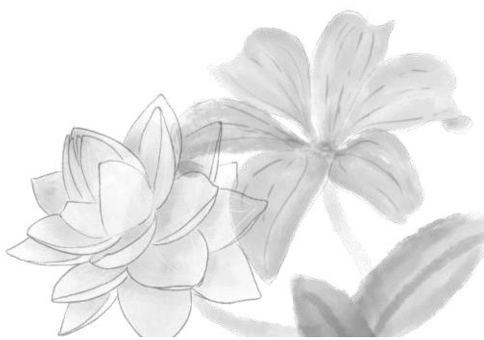

केवल बीती बातें

केवल बीती बातें सुनता सौदाई मन
प्राण, कई बरस गये याद नहीं जाती है।

चांद कई आये हैं
निज मुख पर घूंघट ले
चांदनी उंडेल गयी
निजपन को निज घट से

आये फिर बीत गये एकाकी शीतल छिन
धरती की गोद मगर नींद नहीं आती है।

मधुरस ले उड़ जाता
भंवरा नहीं था मैं
पालता फिर तोड़ लेता
बागबां नहीं था मैं

बस कर जो रह जाती जीवन के आंगन में
प्राण, तुम्हें सच कह दूं गंध नहीं जाती है |

मैं ही खुद बुदबुद हूं
मैं ही खुद एक शूल
मैं ही खुद एक घाव
मैं ही खुद लोन-धूल

धरती पर लेटा हूं तपती सच्चाई में
कल्पना रसीली ही लौट-लौट आती है |

मिटा था तिमिर

मिटा था तिमिर, सुहानी भोर,
भरी थी नीरवता सब ओर |
हृदय की वीणा भी थी शांत,
चला मैं भ्रमण हेतु वन-प्रांत,
निखिल वन में पल्लव-गण भ्रांत |

न जाने कौन नदी के पार
लगा भरने वीणा-झंकार |
अरे सुन कर वह मधुरिम तान
हुए मोहित मेरे ये प्राण |
बींधते चले गये स्वर-बाण |

नयन थे बंद बहाते नीर,
भरी थी मन में मीठी पीर |
हुआ जब बंद मधुर संगीत,
गया था सकल दिवस ही बीत,
रात थी गाती मधुरिम गीत |

यथार्थ और कल्पना

स्वप्न मधुर होता है जितना,
जीवन कटु होता है उतना !

पुष्प भले सुन्दर होता है,
हृदय देख आपा खोता है।
तोड़ उसे लेना चाहे कर,
पर कांटे से बिंध रोता है॥

होती जितनी मधुर कल्पना,
होता नहीं सत्य भी उतना |

दीपक की लौ सुन्दर होती,
देख पतंगा विचलित होता |
पर जल कर वह भी उस लौ में
अपने तुच्छ प्राण को खोता॥

जितनी सुन्दर होती छाया,
क्या उतनी ही होती काया ?

न तो

न तो सहरा कहीं समन्दर है
कहीं कुछ है तो मेरे अंदर है

मैं हूँ जलता हुआ घना जंगल
जो गुजर जाए वह सिकंदर है

राख बन बह गई सुधा जल में
जो रहा सुलगता वो चंदर है

न तो खिड़की कोई न दरवाजा
ये खुला आसमान मेरा घर है

मरे जो जुल्म के हाथों कहीं कोई
सोग में डूबता मेरा दर है

हो सकता है

हो सकता है बन्द कलीं से होठों पर मैं हँसी न लाऊँ।
होठों की मुस्कान छीन लूं, मैं वह तीखा जहर नहीं हूं।

मैंने तड़प तड़प कर रातों,
चंदा को भी तड़पाया है।
तारों के गोरे मुखड़ों को -
अश्रु-कणों से नहलाया है।

हो सकता है खींच न पाऊं नाव तुम्हारी तूफानों में,
मगर बीच मंझधार डुबो दूँ मैं वह पागल लहर नहीं हूँ।

पीर पुरानी साथिन मेरी,
दर्द तड़प से ही नाता है|
मुझको मधुकर का रोना भी,
उसके गुंजन सा भाता है।

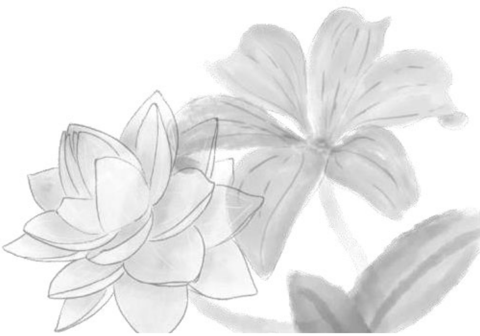

हो सकता है अपने जल में कमलों को मैं खिला न पाऊँ,
पर खिलने वालों को तोड़ूं, में वह निष्ठुर नहर नहीं हूँ।

जिसको दुनिया ठुकराती है,
में उसके पग धो पीता हूँ।
जिससे दुनिया भय खाती है,
इसकी गोदी में जीता हूँ।

हो सकता है अपने अंदर नहीं नए घर बस पाने दूँ,
बसते हुए मकान उजाड़ूं, में वह निर्मम शहर नहीं हूँ।

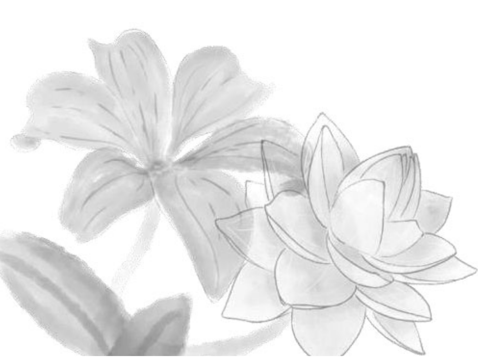

यह तो सच है

यह तो सच है दर्द बंटाने को मिलते हैं साथी जग में।
पर बिछोह उनका ही मन की पीड़ा को दूना करता है॥

जब-जब ग्रीष्म ताप से तप कर मानव इच्छा करते जल की,
तब-तब ही उनको है मिलती हमदर्दी काले बादल की |
लेकिन धरती पर पड़ते ही ऐसा तीव्र ताप उठता है,
बादल तो खुद जलता ही है, प्यास नहीं हो पाती हल्की॥

जीवन में कितने पल ऐसे जिनमें दुख या दर्द नहीं है।
कभी - कभी अनजान मीत बस अन्तस्तल का दुख हरता है॥

जो है सच्चा मीत वही तो हीरा है, अनमोल रतन है,
झूठे साथी के मिलने का सिर्फ एक परिणाम पतन है।
सच्चा साथी अपना ही प्रतिरूप हुआ करता है जग में,
इसीलिये तो जाते - जाते देता एक मधुर तड़पन है॥

झूठा साथी शूल नयन का, इसीलिये दुखदायी होता।
जब भी आता याद सदा वह, अन्तर में पीड़ा भरता है॥

सब को सच्चा मीत मिल सके, यह कैसे सम्भव होता है,
कुछ नर जिनमें एक झलक में, अपनापन अनुभव होता है।
वे तो अन्तर में रहते हैं, और सपन में करें बसेरा,
जाते हैं तो टीस उठे , धीरे - धीरे अन्तर रोता है॥

कैसे - कैसे मीत मिले पर कोई दर्द नहीं समझा है।
जब अन्तर भर उठे याद से तब-तब पीड़ा से भरता है॥
यह तो सच है दर्द बंटाने को मिलते हैं साथी जग में।
पर बिछोह उनका ही मन की पीड़ा को दूना करता है॥

दुख-सुख तो

दुख-सुख तो चलता रहता है।

‘क्या है यदि अब रात आ रही
मुझ पर बनकर मौत छा रही
कल को फिर यह तिमिर ढलेगा’
कह कर दिन ढलता रहता है॥

‘पत्र विहीन हुआ हूँ यदि अब
फल भी चाहे खत्म हुए सब
और मिलेंगे’ - सोच यही तो
तरुवर भी फलता रहता है॥

जग वालों ने है मुख मोड़ा
छाया ने तन को है छोड़ा
‘कभी मिलेंगे’ - सोच यही तो
मन को दुख गलता रहता है॥

सब कहें विदा विदा

एक और विश्वास डाला
एक और अश्रु गला
एक और साधना छली गई

एक और फूल खिला
एक और दीप जला
एक और अर्चना छली गयी

एक और गीत ढला
एक और साज मिला
एक और कल्पना छली गयी

सब कहें विदा-विदा
एक साथ उठें गा
एक और पालना छली गयी

जग वालो, कह दो

जग वालो, कह दो तुमको कब
भाया है मेरा मुस्काना?

मेरे अंतर की पीड़ा ने
बन कर गीत तुम्हें बहलाया
दुनिया भर को प्यार सिखा कर
देखो खुद निष्ठुर कहलाया
इस मन में जो भरी वेदना
उसको तुमने कब पहचाना?

कलियां अपने रंग-महक से
मोह जगत का मन लेती हैं
पर भंवरे के गीत-जाल में
बँध कर आपा खो देती हैं

भोली कलियों की पीड़ा को
जग वालो, तुमने कब जाना?

दो दिन का मेहमान यहां हूं
चार दिनों का जग में डेरा
सच पूछो तो, दुनिया वालो,
मेरा नभ के पार बसेरा
होंठों पर मुस्कान खिल रही
नयन चाहते अश्रु बहाना

मैंने अपने गीत लुटाये

और विश्व को क्या मैं देता
जिससे शुभ इच्छाएं लेता?
किन्तु सभी गीतों के बदले
मैंने दिल के छाले पाये।
मैंने अपने गीत लुटाये।

गीत बहुत ही रस वाले थे
मधु से बढ़ कर मद वाले थे
मगर नहीं ये ख़ुश्क दिलों का
जाने क्यों सिंचन कर पाये।
मैंने अपने गीत लुटाये।

लेकिन सच है इस जीवन का
मेरे गीतों में क्रंदन था
जाने किस की पलकें भीगीं
जाने किसने अश्रु बहाये
मैंने अपने गीत लुटाये।

सुदीप

१ अप्रैल १९४२ (पंजाब, ब्रिटिश इंडिया) - २५ जून २०२०(मुंबई, भारत)

साहित्यकार, पत्रकार, संपादक, कवि, लेखक, कहानीकार

सुदीप जी हिंदी साहित्य, भारतीय पत्रकारिता, समानांतर कथा आंदोलन के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। वे चार लघु-कथा संग्रह, तीन उपन्यास, चार जीवनियों के सर्जक हैं। विभिन्न भारतीय पत्रिकाओं और पुस्तक संकलनों में उनकी साठ से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हैं। सुदीप जी की कई रचनाएँ अंग्रेजी, मलयालम, पंजाबी, मराठी और अन्य भाषाओं में अनुवादित हैं। पंजाबी के आधा दर्जन उपन्यासों का हिंदी अनुवाद उनकी रचनात्मक धरोहर है।

वरिष्ठ कहानीकार सुदीप जी एक कुशल सम्पादक भी रहे। धर्मयुग, सारिका, रविवर, करंट, संडे-मेल, शीक, श्री वर्षा, अमर उजाला, स्क्रीन और हमारा महानगर पत्रिकाओं के संपादकीय और पत्रकारिता करियर के दौरान उनके दो हजार लेख प्रकाशित हुए। सन २००० में, मुंबई प्रेस क्लब ने उनकी अपार पत्रकारिता योगदान के लिए सुदीप जी को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

सुदीप जी ने भारतीय फिल्मों और टीवी श्रृंखलाओं के लिए संवाद, स्क्रिप्ट, स्क्रीन-प्ले, लघु कथाएँ लिखीं - और कइयों को राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए जैसे सन १९९० में 'अंकुर, मैना और कबूतर' फ़िल्म ने भारत का सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म

पुरस्कार जीता और जमनालाल बजाज की जीवनी फिल्म 'कथनी करनी एक सी' ने भारतीय सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक मनोरंजन फिल्म पुरस्कार जीता।

प्रकाशित लेख-

साधु सिंह परचारी (उपन्यास, १९८०)

अंतहीन (कहानी संग्रह, १९८१)

नीड़ (उपन्यास, १९८२)

तीये से अट्ठा (कहानी संग्रह,१९८३)

लंगड़े (कहानी संग्रह, १९८६)

कथनी करनी एक सी (जीवनी, १९८८)

जन्मभूमि से बंधा मन (जीवनी, १९९०)

एक जीवंत प्रतिमा (जीवनी, १९९३)

मिट्टी के पांव (उपन्यास, १९९५)

एक जिंदगी कमल जैसी (जीवनी, १९९५)

बिनु नारा सब सून (व्यंग्य, २०००)

अनहद नाद (कहानी संग्रह, २००२ & इ-बुक २०२४)

पानीपत की यादें (संस्मरण, २०२४)

***

वेब साइट www.WriterSudeep.com

फेसबुक www.facebook.com/WriterSudeep

संपर्क Infodesk@WriterSudeep.com